खण्ड–8, अंक–1, वर्ष–2020 वैज्ञानिक आलेख
D.O.I.: 10.22445/avsp.v8i1.33

कोविड–19 महामारी और विश्व स्वास्थ्य संगठन की भूमिका

आशुतोष त्रिपाठी[1] एवं अजय कुमार पाल[2]

[1]रसायन विज्ञान विभाग, पी.बी.पी.जी. कॉलेज प्रतापगढ़ सिटी–230 002, उ.प्र., भारत
[2]हीरालाल राय टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, धरमपुर रोड, सुमेरा, मुज़फ्फरपुर–843 113, बिहार, भारत

प्राप्ति तिथि–30.09.2020, स्वीकृति तिथि–25.11.2020

सार– मार्च 1918 में जब प्रथम विश्वयुद्ध[1] अपने अंतिम दौर की ओर बढ़ रहा था, तब स्पैनिश फ्लू महामारी की पहली लहर आई थी। यह शुरूआती लहर उन चीनी मजदूरों के कारण आयी थी, जिन्हें यूरोप लाया गया था। यूरोप के युद्ध क्षेत्रों से शुरू होते हुए महामारी ने सभी पक्षों के सैनिकों को अपनी चपेट में ले लिया। फिर जब वे अपने–अपने देश लौटे या जेलों से छुटे तो उनके साथ उन देशों के अंदरूनी इलाकों तक संक्रमण फैल गया। एक सदी के पश्चात् एक बार फिर चीन के वूहान शहर दिसम्बर 2019 से कोविड–19 के संक्रमण का पहला मामला सामने आने के बाद आज पूरे विश्व में कोरोना वायरस संक्रमितों की संख्या बढ़कर 2.54 करोड़ के पार हो गयी है जिसमे आज तक 8.49 लाख[2] से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। कोविड–19 के संक्रमण का पहला मामला सामने आने के बाद संयुक्त राष्ट्र की स्वास्थ्य एजेंसी विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस विश्वव्यापी महामारी से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संगठन के महानिदेशक ने उन छः महत्वपूर्ण बिन्दुओं की जानकारी दी है। जिनके तहत यू.एन. एजेंसी कोविड–19 संक्रमण के खिलाफ वैश्विक कार्यवाही का नेतृत्व कर रही है। प्रस्तुत लेख में कोरोना महामारी में विश्व स्वास्थ्य संगठन की क्या भूमिका रही है उसका संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

बीज शब्द– मिथक दूर करते हुए, पुख्ता तैयारी व कार्यवाही, सटीक जानकारी प्रदान करना, अहम निजी बचाव सामग्री को स्वास्थ्य कर्मियों तक पहुँचाना, स्वास्थ्य कर्मियों को प्रशिक्षित व संगठित करना, वैक्सीन पर शोध, निर्धनों एवं निर्बलों की मदद

Covid-19 Epidemic and Role of World Health Organization

Ashutosh Tripathi[1] and Ajay Kumar Pal[2]

Hira Lal Rai Teachers Training College, Dharampur Road
Sumera, Muzaffarpur-843 113, Bihar, India

Abstract- The first wave of the Spanish flu pandemic occurred in March 1918, when World War First was heading towards its final phase1. This initial wave was caused by the Chinese laboures who were brought to Europe. Starting in the war zones of Europe, the epidemic engulfedsoldiers from all sides. Then when they returned to their respective countries or were released from jails, the infection spread withthem to the interior of those countries. After a winter, once again the first case of Kovid-19 infection has been reported from Wuhancity of China since December 2019, today the number of corona virus infections across the world has crossed 2.54 crores, which has more than 8.49 lakhs till now2 people have died. The United Nation health agency, the World Health Organization, has played an important role in dealing with this worldwide pandemic since the first case of COVID-19 infection was revealed. The Director General ofthe organization has given information about those six important points. Under which the UN agency is leading the global actiona gainst Kovid-19 infection. In the present article, a brief description of what the World Health Organization has played in the coronaepidemic is given.

Corresponding Author: drashutoshtripati@gmail.com, ajaypal.pal086@gmail.com

Key words- Providing accurate information, While dispatching solid preparation and action myths, delivering Importantpersonal defence material to health workers. Training and organizing health workers. Research on vaccine, helping attitude for weak and poor people

1. परिचय

मार्च 1918 में जब प्रथम विश्वयुद्ध[1] अपने अंतिम दौर की ओर बढ़ रहा था, तब स्पैनिश फ्लू महामारी की पहली लहर आई थी। यह शुरूआती लहर उन चीनी मजदूरों के कारण आयी थी, जिन्हें यूरोप लाया गया था। यूरोप के युद्ध क्षेत्रों से शुरू होते हुए महामारी ने सभी पक्षों के सैनिकों को अपनी चपेट में ले लिया। फिर जब वे अपने–अपने देश लौटे या जेलों से छूटे तो उनके साथ उन देशों के अंदरूनी इलाकों तक संक्रमण फैल गया। जून 1918 तक यह संक्रमण ऑस्ट्रेलिया, रूस, चीन, भारत, अफ्रीका, जापान और यूरोप के अधिकांश हिस्सों तक पहुँच गया था फिर जुलाई 1918 में संक्रमण में अपने आप कमी आई। पहली लहर कम घातक थी, जिसमें कई लोग बीमार तो हुए, लेकिन मृत्युदर इतनी कम थी कि क्वारंटाइन जैसे किसी कदम को लागू नहीं किया गया। फिर सितम्बर 1918 में दूसरी लहर आई। दूसरी लहर आने के तीन से चार महीने के भीतर ही अमेरिका में तीन लाख लोगों की मौत हो गयी थी। दस लाख की आबादी वाली मुम्बई में मौत का आंकड़ा 15,000 बताया गया था। देखते ही देखते पूरे भारत में मरने वालों की संख्या दो करोड़ के करीब पहुँच गयी थी। यह लहर यदि अधिक जानलेवा साबित हुई तो उसका एक कारण यह भी था कि उन दिनों में विज्ञान ने इतनी तरक्की नहीं की थी कि उस संक्रमण के कारण को समझा जा सके।

स्पैनिश फ्लू की पहली लहर के बाद दुनिया भर में एक लापरवाही देखी गयी। लोगों ने मान लिया कि स्पैनिश फ्लू का सबसे बुरा दौर निकल चुका है। ज्यादातर लोग यह मानने को तैयार ही नहीं थे कि एक विकराल दूसरी लहर आने वाली है। नतीजा यह हुआ कि यात्राएं होने लगीं, त्योहार मनाए जाने लगे जो कि आगे चलकर जानलेवा साबित हुए। सर्दियों में वायरस से फैलने वाले संक्रमण कहीं ज्यादा खतरनाक होते हैं। धूप और गर्मी के असर से अधिकांश वायरस कमजोर पड़ जाते हैं। हालाँकि उस समय के वैज्ञानिकों को इस बात की जानकारी नहीं थी। उन्हें तो यह भी पता नहीं था कि एक वायरस दिखता कैसा है? एक सदी के पश्चात् एक बार फिर चीन के वूहान शहर में दिसम्बर 2019 से कोविड–19 के संक्रमण का पहला मामला सामने आने के बाद आज पूरे विश्व[2] में कोरोना वायरस संक्रमितों की संख्या बढ़कर 2.54 करोड़ के पार हो गयी है जिसमें आज तक 8.49 लाख से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है।

वैश्विक महाशक्ति माने जाने वाले अमेरिका में कोरोना से संक्रमित होने वालों की संख्या 60 लाख को पार कर 60,29,695 पर पहुँच गई है और अब तक मरने वालों की संख्या 1,83,585 हो चुकी है। दूसरे नम्बर पर चल रहे ब्राज़ील में अब तक 3,90,8,272 लोग कोविड–19 से संक्रमित हो चुके हैं जबकी 1,21,381 लोगों की मौत हो चुकी है। अपने भारतवर्ष की बात की जाये तो परिवार कल्याण मंत्रालय[3] की ओर से जारी किये गए आंकड़े बहुत ही भयावह तस्वीर पेश कर रहें हैं। इसके अनुसार भारत में संक्रमितों की संख्या लॉकडाउन के पश्चात् भी बढ़कर 36,91,167 पर पहुँच गई है जबकी मृतकों की संख्या बढ़कर 65,288 हो चुकी है। भारतवर्ष में अगस्त माह के अंतिम सप्ताह में प्रत्येक दिन औसतन 70,000 नए लोग संक्रमित हो रहें हैं तथा मरने वालों की संख्या औसतन 800 प्रतिदिन मौतों के साथ बढ़ रही है। यदि भारतवर्ष में इसी रफ्तार से संक्रमितों की संख्या बढ़ती रही तो आने वाले कुछ महीनों में भारत कोविड–19 संक्रमितों की संख्या के मामले में ब्राजील को पीछे छोड़कर दूसरे नम्बर पर पहुँच जायेगा। अनलॉक का चरण भी प्रारंभ हो चुका है जिसमें लोगों ने शायद यह मान लिया है कि कोरोना भी समाप्त हो गया है। लोग लापरवाही बरतने लगे हैं जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए। क्योंकि सरकार के ऊपर ही सबकुछ छोड़ देना बिल्कुल उचित नहीं है तथा बहुत अधिक समय तक सम्पूर्ण देश को बंद भी नहीं रखा जा सकता है।

क्र.सं.	देश	कुल संक्रमितों की संख्या	कुल मौतें
1	अमेरिका	60.49 लाख	1.84 लाख
2	ब्राज़ील	37.64 लाख	1.18 लाख
3	भारत	33.95 लाख	61,755
4	रूस	9.80 लाख	16,194

स्रोत– दैनिक जागरण समाचार पत्र, बिहार संस्करण, 22.09.2020, पृ.–01

कोविड–19 के संक्रमण का पहला मामला चीन के वूहान शहर में दिसम्बर 2019 में सामने आने के बाद संयुक्त राष्ट्र की स्वास्थ्य एजेंसी विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने इस विश्वव्यापी महामारी से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संगठन के महानिदेशक ने उन छः महत्वपूर्ण बिन्दुओं की जानकारी दी है। जिनके तहत यू.एन. एजेंसी कोविड–19 संक्रमण के खिलाफ वैश्विक कार्यवाही का नेतृत्व कर रही है। प्रस्तुत लेख में कोरोना महामारी में विश्व स्वस्थ्य संगठन की क्या भूमिका रही है उसी का संक्षिप्त विवरण दिया गया है।

2. ठोस / सटीक तैयारी व कार्यवाही

विश्व स्वास्थ्य संगठन कोविड–19 के लिए रणनीतिक तैयारी और कार्यवाही योजना जारी किया है जिसके तहत उन प्रमुख उपायों और संसाधनों की शिनाख्त की गई है। जिनकी जरूरत कोविड–19 की कार्यवाही के लिए होगी। यू.एन. स्वास्थ्य एजेंसी के 6 क्षेत्रीय कार्यालयों के अलावा विभिन्न देशों में 150 से ज्यादा कार्यालय है। जहाँ कार्यरत कर्मचारी कोविड–19 के प्रकोप से दुनिया को बचाने के लिए स्वास्थ्य प्रणालियों को पुख्ता बनाने के लिए प्रयासरत है। इतना ही नहीं विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने साझीदार संगठनों के साथ कोविड–19 से निपटने के लिए एकजुटता कार्यवाही कोश (सॉलीडेरिटी रेस्पॉन्स फण्ड) बनाया है जिससे मरीजों की देखभाल अग्रिम मोर्चे पर कार्य कर रहे स्वास्थ्य कर्मियों के लिए जरूरी बचाव सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित करना, शोधकार्य में सहायता प्रदान करना, वैक्सीन निर्माण में मदद पहुँचाने आदि में उपयोग किया जायेगा।

3. मिथक दूर करते हुए, सटीक जानकारी प्रदान करना

विश्वव्यापी महामारी से जुड़ी हर तरह की जानकारी इंटरनेट के माध्यम से आसानी से प्राप्त की जा रही है। जिसमें से बहुत सी जानकारियाँ ऐसी हैं जो भ्रांतियाँ फैला रही हैं। इन्हीं गलत सूचनाओं के प्रकोप से बचाने के लिए यू.एन. स्वास्थ्य एजेंसी सटीक और उपयोगी जानकारी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के प्रयासों में जुटी है ताकि लोगों की जिंदगियां बचाई जा सकें। इसके तहत आम लोगों से लेकर स्वास्थ्य कर्मियों और देशों के तकनीकी सलाह उपलब्ध कराने के साथ –साथ तथ्यों पर आधारित दिशा निर्देश भी उपलब्ध कराये गये हैं ताकि भ्रांतियां दूर की जा सकें। जानकारी की सटीकता सुनिश्चित करने के लिए यू.एन. स्वास्थ्य एजेंसी ने एक टीम का गठन किया है ताकि हर एक को सामयिक, सटीक और सरल भाषा में समझने लायक परामर्श विश्वसनीय स्त्रोतों से हासिल हो सके। इसके अलावा नियमित रूप से हालात की जानकारी देने वाली रिर्पोटें प्रकाशित की जा रही हैं और नियमित प्रेसवार्ता भी कि जा रही है। जिसमें ताजा आंकड़े, सूचना एवं तथ्य बताये जा रहें हैं। सोशल मीडिया और टेक्नोलॉजी जगत की अनेक कंपनियां भी यू.एन. स्वास्थ्य एजेंसी के साथ मिलकर जानकारियां साझा कर रही हैं।

4. अहम निजी बचाव सामग्री को स्वास्थ्य कर्मियों तक पहुँचाना

आज जब अपने भी कोविड–19 मरीजों की देखभाल से बच रहें है और उनकी मजबूरी भी है की वो अपना बचाव करें। ऐसे समय में ध ारती के भगवान अपने अपने घरों से महीनों दूर रहकर पूरी तत्परता एवं तन्मयता से कोविड–19 मरीजों की देखभाल कर रहे हैं ऐसे में यू.एन. स्वास्थ्य एजेंसी (WHO) का और हम सभी का दायित्व बनता है की हम इन फ्रन्ट लाइनर कोरोना योद्धाओं के लिए बचाव उपकरणों की व्यवस्था करें। इसमें यू.एन. स्वास्थ्य एजेंसी (WHO)[4] द्वारा लगभग 169 देशों में अब तक 408 मिलियन यूनिट से ज्यादा निजी बचाव सामग्री, 172 मिलियन पी.पी.ई. किट भेजा जा चुका है। इतना ही नहीं अब तक 18 मिलियन यूनिट से ज्यादा पी.सी.आर. किट 159 देशों में अब तक भेजी जा चुकी हैं। इस दिशा में अभी और प्रयास करने की जरूरत है इसलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन, इंटरनेशनल चेम्बर ऑफ कॉमर्स, विश्व आर्थिक मंच व अन्य निजी क्षेत्र की इकाइयों के साथ मिलकर इस प्रकार की सामग्रियों का प्रबंध व उत्पादन बढ़ाने पर कार्य कर रही है। इसी दिशा में कार्य करते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन यू.एन. कोविड–19 सप्लाई चेन टास्क फोर्स[5] अर्थात आपूर्ति श्रृंखला कार्यबल शुरू किया है। जिसका उद्देश्य जरूरी बचाव सामग्री की उपलब्धता को तात्कालिक रूप से बढ़ाना है।

5. स्वास्थ्य कर्मियों को प्रशिक्षित व संगठित करना

WHO का लक्ष्य लाखों की संख्या में स्वास्थ्य कर्मियों की OPEN WHO प्लेटफॉर्म के जरिये प्रशिक्षित करना है। इस ऑनलाइन उपकरण के जरिये जीवन की रक्षा करनें में सहायक जानकारी को अग्रिम मोर्चे पर जुटे स्वास्थ्य कर्मियों तक पहुँचाया जा रहा है। यह एक ऐसे भय के रूप में भी काम करता है। जिसके जरिये सार्वजनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञता की उपलब्धता तेजी से बढ़ाई जा सकती है और उसके अलावा मुख्य मुद्दों पर गहन विचार विमर्श के साथ–साथ राय व सलाह भी भेजी जा सकती है। अब तक 43 भाषाओं में 12 लाख से ज्यादा लोग हिस्सा ले चुके हैं। इस कार्य में देशों को दुनिया भर में मौजूद उन विशेषज्ञों से भी मदद मिल रही है जिन्हें यू.एन. एजेंसी के

ग्लोबल आउट ब्रेक आल्टर एण्ड रेस्पॉन्स (GORAN) के तहत तैनात किया गया है। आपात चिकित्सा दल वैश्विक स्वास्थ्य कार्यबल का अहम हिस्सा है। ये दल उच्चस्तर पर प्रशिक्षित होते हैं और उन्हें आपदा व आपात हालात में कहीं भी भेजा जा सकता है।

6. वैक्सीन पर शोध

कई देशों की प्रयोगशालाओं में ऐसे परीक्षण हो रहे हैं, जिनसे उम्मीद है कि वैक्सीन का रास्ता स्पष्ट हो सकेगा। इन प्रयासों को स्फूर्ति देने के लिए यू.एन. स्वास्थ्य एजेंसी फरवरी महीने में 400 से ज्यादा शीर्ष शोधकर्ताओं को एक मंच पर लाई ताकि शोध प्राथमिकताओं की पहचान की जा सके साथ ही एक जुटता ट्रायल भी शुरू किया जायेगा जिसमें 90 से ज्यादा देश कोविड–19 का असरदार इलाज ढूंढने में हिस्सा ले रहे हैं इन प्रयासों का लक्ष्य उन मौजूदा दवाईयों का परीक्षण करना है जो बीमारी के उपचार या लोगों के जीवन की रक्षा में सहायक साबित हो सकती हैं। वायरस को बेहतर ढंग से समझने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने शोध प्रोटोकॉल विकसित किया है जिसे 40 से ज्यादा देशों में समन्वित ढंग से इस्तेमाल किया जा रहा है। 130 वैज्ञानिकों, धनराशि उपलब्ध कराने वालों और निर्माताओं ने एक वक्तव्य पर हस्ताक्षर किये हैं जिसमें कोविड–19 के खिलाफ कारगर वैक्सीन को विकसित करने के लिए यू.एन. स्वास्थ्य एजेंसी के साथ काम करने का संकल्प जताया गया है।

7. निर्धनों एवं निर्बलों की मद्द

विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक ने 8 अप्रैल 2020 को प्रेस वार्ता के दौरान कहा की यू.एन. एजेंसी अनेक अन्य कार्यवाहियों और पहलों का हिस्सा लेकिन उनमें से सभी इन स्तम्भों के तहत ही आते हैं। एजेंसी का मुख्य ध्यान देशों व साझीदारों के साथ मिलकर काम करने पर है ताकि इस साझा खतरे के खिलाफ दुनिया को एक साथ लाया जा सके उन्होंने कहा की एक बड़ी चिंता विश्व में निर्धनतम और नाजुक हालत में रह रहे लोग व समुदाय हैं और सभी देशों में ऐसे लोगों की निष्पक्षता तटस्थता व समानता के साथ मदद करने के लिए विश्व स्वास्थय संगठन संकल्पित है।

8. निष्कर्ष

इस प्रकार इस वैश्विक महामारी में विश्व स्वास्थ्य संगठन अपने उद्देश्यों को ध्यान में रखकर तैयारी एवं कार्यवाहियों को विभिन्न देशों के साथ बेहतर तालमेल रखते हुए सफलतापूर्वक पूर्ण कर रहा है।

संदर्भ

1. दैनिक जागरण समाचार पत्र, संपादकीय पेज, 15 अक्टूबर 2020
2. जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी, अमेरिका रिर्पोट, अगस्त 2020।
3. परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार रिर्पोट, अगस्त 2020।
4. World Health Organation, COVID-19 Pandamic, Geneva : World Health Organation, 20August 2020
5. Supply Chain Inter Agency Coordination Cell Weekly Situation update, 7-15 September 2020